International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 (www.ijsrset.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRSET

वर्तमानमीडिया और स्त्री सरोकार

डॉ॰ नीलम
एसोसिएट प्रोफेसर, लक्ष्मीबाई कॉलेज, (दिल्ली विश्वविद्यालय) अशोक विहार फेस 3 दिल्ली ।

Article Info
Volume 9, Issue 3
Page Number : 599-603
Publication Issue :
May-June-2022
Article History
Accepted : 06 May 2022
Published: 22 May 2022

ABSTRACT
आज हम इक्कीसवीं सदी में भी अनेक विरोधाभासों के साथ जी रहे हैं। देश और समाज ने कई क्षेत्रों में खूब तरक्की किया है। सरकारी नीतियाँ ग्लोबलाइजेशन और उदारीकरण को लेकर लचीली हुई हैं। इन्हीं परिस्थितयों में मिडिया का स्वरूप भी बदला है। उसका दायरा और अधिकार क्षेत्र और बड़ा हुआ है जिसके कारण वह अब उपेक्षित और शोषित लोगों पर भी फोकस करने लगा है। हम जानते हैं कि भारत जैसे पितृसत्तात्मक देश में स्त्रियाँ हमेशा दोयम दर्जे पर रही हैऔर यही दर्जा उनको शोषण की दुनिया में धकेलता है। अनेक समाज सुधार आंदोलनों की तरह मिडिया ने भी स्त्रियों के जीवन की हकीकत को खबरों में ढालकर लोकतांत्रिक दृष्टिकोण को मजबूत किया है।

मीडिया की अपनी कुछ जिम्मेदारियां होती हैं अपना उद्देश्य होता है। समाज के सत्य को बाहर निकालने का काम मीडिया का होता है मीडिया एक सोच को निर्मित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है जिसके कारण एक नवीन मनुष्य का जन्म होता है। सत्य की खोज करके उसको स्थापित करना मीडिया का सबसे महत्वपूर्ण पहलू होता है इसीलिए तो इसे देश का चौथा स्तंभ कहा जाता है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है, अगर यह डगमगा गया तो देश की नींव हिल सकती है।देश को मजबूती प्रदान करने में मीडिया की अहम भूमिका होती है ।मीडिया का संबंध जन सरोकार से होता है यानी आम लोग अगर मीडिया के अंदर से जन सरोकार निकाल दिया जाए तो वह मृत्य हो जाएगी हालांकि आज के वर्तमान दौर में मीडिया की छवि दिन प्रतिदिन गिरती जा रही है।लेकिन ऐसा नहीं है कि मीडिया पूर्ण रूप से अपनी गरिमा खो चुका है आज भी बहुत सारे ऐसे मीडिया कर्मी हैं जो देश के इस चौथे स्तंभ को बचाए रखने में अपनी आहुति दे रहे हैं।

आज भी जब किसी को न्याय की उम्मीद नहीं रहती तो वह मीडिया की तरफ आंख उठाए उम्मीद का दामन पकड़े रहता है। जब जब मीडिया अपने कर्तव्य बोध को पीछे नहीं धकेलती और आम लोगों के जीवन को उजागर करती है बिना किसी राजनीति के तब तब अन्याय पर न्याय का परचम लहराता है। इसे हम कई रूप में देख सकते हैं। यहां पर हम वर्तमान मीडिया में स्त्री सरोकार को देखेंगे। अगर हम भारतीय मीडिया के पृष्ठभूमि को देखें तो उसमें महिलाएं नाम मात्र की दिखाई ही पड़ती हैं। मीडिया के अंदर अगर हम स्त्री सरोकारों को लेकर देखें तब भी मीडिया का वो स्वरूप इतना विस्तृत नहीं था जितनाकि पिछले 20-25 सालों में इसका चरित्र दिखाई पड़ता है। जनसरोकारों के प्रति जो भावुकता दिखाई पड़ती है, जो चेतना दिखाई पड़ती है वो बेमिसाल है।स्त्री किसी भी समाज का सबसे महत्वपूर्ण घटक है क्योंकि वो समाज का आधा हिस्सा है और वह एक सम्पूर्ण और मुकम्मल नागरिक है,जिसको उसी सम्पूर्णता के साथ पेश करना मीडिया का दायित्व है। लेकिन हम देखते हैं कि

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

भारतीय मीडिया में भी जातिवाद, वर्णवाद और धर्मवाद हावी रहते हैं जिसके कारण स्त्रियों को कई बार उनके मूल स्वरूप से अलग दिखाया जाता है।कई बार उनके चरित्र को लेकर प्रश्न पैदा किए जाते हैं। कई बार उनका चरित्र हनन किया जाता है। ऐसी कई तमाम विसंगतियां मीडिया के अंदर भी हैं। कई बार मीडिया स्त्रियों को खिलौना मात्र समझता है। यानि मीडिया के अंदर भी अगर देखें तो पितृसत्ता काबिज है। जैसे हम अगर विज्ञापन को ले लें जो विज्ञापन टेलीविजन पर या अखबारों में या जो तमाम वेबसाइटों पर महिलाओं को लेकर जो विज्ञापन तैयार किए जाते हैंऐसा लगता है कि महिलाओं का रंग–रूप, उनका देह सिर्फ पुरूषों की अय्याशी के लिए बना है। समाज की इस सोच को देखकर यह लगता है कि वो बस अय्याशी का ही प्रतीक हैं। क्योंकि उपभोक्ता जब उसको देखता है तो देख कर वह महिलाओं के द्वारा उस उत्पाद तक पहुंचता है जो प्रोडक्ट है। मान लीजिए किसी कार का विज्ञापन है अब कार कितना स्मूथ चलती है उसको दिखाने के लिए किसी छरहरी मॉडल को अर्धनग्न अवस्था में दिखाया जाता है और ये जो बड़ी–बड़ी कॉर्पोरेट कंपनियां है उस पर कोई प्रश्न चिन्ह नहीं लगाता। यहां तक कि वो हमारे टेलीविजन पर प्रसारित किए जाते हैं कोई भी इसके खिलाफ नहीं बोलता है न तो कोई महिला संगठन बोलता है,न कोई व्यक्ति बोलता है ना कोई सरकार बोलती है,ना कोई मंत्री बोलता ना, न कोई साधु बोलता है ना कोई साध्वी बोलती हैक्योंकि जो उत्पाद है जो पूंजीवादी व्यवस्था है उसने समाज को धर्म को बुरी तरह से अपने अंदर जकड़ लिया है जिसके कारण कोई इसके खिलाफ नहीं बोलता ऐसा लगता हे कि ये आपस में संगुफित हो गये हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि 21वीं सदी के इस दौर में जब पूंजीवाद का चरम है वैज्ञानिक क्रांति की चरम अवस्था है इस स्थिति में चहुंओर स्त्री अपने अस्तित्व को लेकर, अपनी छवि को लेकर निरंतर संघर्षरत है। उसकी इस लड़ाई में कहीं ना कहीं वर्तमान मीडिया की एक रचनात्मक भूमिका भी दिखाई पड़ती है। हम यहां पर मीडिया के उस स्वरूप को लेंगे जो स्त्रियों को लेकर सकारात्मक भाव रखते हैं। स्त्रियों को लेकर उसकी सकारात्मक सोच है। यहां पर अगर हम पिछले दो साल के अंदर देखें कि कोरोना काल के दौरान किस तरह महिलाओं के ऊपर घरेलू हिंसा किया गया जबरदस्ती उनके साथ घरों के अंदर यौन संबंध स्थापित किए गयें। दुनिया भर के अखबारों में ऐसी कई रिपोर्टिंग आई है कई डेटा दिये गये हैंपूरी दुनिया में उस दौरान स्त्रियों का यौन शोषण हुआ है न कि सिर्फ भारत में यानि पितृसत्ता का जो बोल बाला है लगभग इस दौरान पूरी दुनिया में दिखाई देता है। राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष रेखा शर्मा ने बीबीसी को बातचीत के दौरान बताया कि लॉकडाउन के दौरान महिलाओं के साथ घरेलू हिंसा के मामले में इजाफा हुआ है। शिकायत दर्ज करने के लिए महिला आयोग ने एक व्हाट्सएप हेल्पलाइन नंबर शुरू किया है। जिसमें 23 मार्च से लेकर 16 अप्रैल के बीच में घरेलू हिंसा के 239 मामले दर्ज हुए हैं ।यह उन 123 मामलों की तुलना में कहीं ज्यादा हैं जो लॉकडाउन शुरु होने से पहले उस महीने में आये थे। इस संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेशन ने अप्रैल के शुरुआत में कहा था कि 'लॉकडाउन के दौरान दुनियाभर में घरेलू हिंसा के मामले में भयावह वृद्धि हुई है'।'महिलाओं के ऊपर हो रहे इस अमानवीय व्यवहार को अखबार से लेकर टेलीविजन के न्यूज चैनलों ने इसे कवरेज किया।हम देख सकते है कि महिलाओं की हकीकत को बयान करने का मीडिया ने एक सार्थक कदम उठाया।

ठीक इसी प्रकार से अगर हम देखें तो 90 के दशक से अगर थोड़ा पीछे जाएं या उसके आसपास देखे तो भारतीय मीडिया के अंदर जो थोड़ा बहुत औरतें थीं वह पत्रकारिता में हद से हद समाचार वाचक,न्यूज रीडर या उद्घोषिता तक ही दिखाई पड़ती थीं। लेकिन संपादन का जो दायित्व होता था टेलीविजन में या रेडियो पर या अखबारों में उसके चीफ एडीटर पुरुष ही हुआ करते थे।लेकिन आज के दौर में ये सब चीजें टूटी हैं। अब औरतें भी इस दायित्व को बखूबी सँभाल रही हैं।हम देखते हैं कि वो फील्ड रिपोर्टिंग भी कर रही हैं।कहने का तात्पर्य है कि जो काम अभी तक सिर्फ पुरुषों के लिए समाज ने गढ़े थे उसे आधुनिक मीडिया ने तोड़ा और लगभग हर वो काम मीडिया में स्त्रियां कर रही हैं जो कभी केवल पुरुष मीडियाकर्मी ही किया करते थे। ये एक महत्वपूर्ण कदम हुआ महिला पत्रकारिता की भागीदारी का। इसको अगर हम ऐसे देखें कि मीडिया ने महिलाओं को लेकर किस तरह से अपने को रिऐक्ट किया है आगे काम किया है तो जाहिर सी बात है कि मीडिया वाकई में समाज का राष्ट्र का या यूं कहें कि वह विश्व प्रहरी है दुनिया का एक सिपाही है, जो महिलाओं के हक को लेकर,उनकी अस्मिता को लेकर, उनके संघर्ष

को लेकर, उनके वजूद को लेकर, उनके तमाम जीवन की समस्याओं को लेकर देखे तो उनके जीवन की हकीकत को पेश करने में मीडिया हमेशा आगे रहा है।

स्त्री को हमेशा दोयम दर्जे के स्थान पर रखा गया है। उसे घर के बाहर का पायदान ही समझा जाता है कि आओ और पोछो फिर निकल जाओ। जिसकी कोई अहमियत नहीं होती। वो चाभी के गुड़िया के समान पुरुषवादी की चाभी से बंद होती और चलती है। पवित्रता और अपवित्रता के धागे में आज भी वह पिरोई जाती है। लेकिन अगर आप किसी को बहुत ज्यादा दबाते हैं तो वो आखिर विद्रोह कर ही उठता है अगर उसे अंबेडकर के शब्दों में कहें तो 'गुलाम को अगर उसकी गुलामी याद दिला तो वह विद्रोह कर उठेगा'। यही उदाहरण हम सबरीमाला मंदिर के संदर्भ में देख सकते हैं। जहां वर्षों पूर्व बनाई प्रथा के खिलाफ मंदिर में स्त्रियों के प्रवेश को लेकर वहां की स्त्रियों ने मिलकर बिगुल बजायी उनकी इस टंकार ने देश के धार्मिक मठाधीशों की गद्दी को हिला कर रख दिया। पवित्रता और अपवित्रता के माप दंड पर चारो तरफ बहस चलने लगी। मीडिया वकील, जज, आम जागरूक जनता और स्त्रियों की आवाज बनकर मुखर रूप से सामने आया और इस वर्षों पुरानी सड़ी गली बदबूदार परंपरागत परंपरा के खिलाफ एक मुहिम चलाई। मीडिया के इस वैज्ञानिक पहल से पूरे देश में आज के वैज्ञानिक युग में भी चल रही ऐसी घिनौनी अंधविश्वासी परंपरा के खिलाफ देश की जनता ने मिलकर आवाज उठाई। जिसका नतीजा यह हुआ कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा एक बहुत बड़ा निर्णय आया स्त्रियों का मंदिर में प्रवेश को लेकर। स्त्रियों ने मिलकर जो आवाज उठाई और मीडिया ने जो अपनी सकारात्मक भूमिका अदा की उसका नतीजा यह निकला कि वर्षों पुरानी परंपरा ढह गई। पवित्रता अपवित्रता की चादर मैली होकर फट गई।

स्त्रियों द्वारा लड़ी गई लड़ाई कि स्त्रियों को भी मनुष्य समझो एक मील का पत्थर साबित हुई और सबके लिए एक प्रेरणा बनी। यह 21वीं सदी की बहुत बड़ी उपलब्धि है और कहीं ना कहीं इसके पीछे स्त्रियों का अपना संघर्ष,अपनी लड़ाई सशक्त रूप में सामने दिखाई पड़ती है। अगर हम कुछ घटनाओं को ले लें अपने भारत में तो 16 दिसंबर का जो निर्भया कांड है जिसने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। दिल्ली में ये घटित घटना को सोशल मीडिया में किस तरह प्रसारित किया गया। सोशल मीडिया ने ही नहीं बल्कि मुख्य मीडिया ने इस घटना को लेकर यहां तक कि टेलीविजन ने भी बहुत सारे कार्यक्रम दिखाएं। इससे जुड़ लगभग सारे आंदोलन को कवर किया। सारी हमारी जो प्रिंट मीडिया है जो हमारे अखबार हैं पत्रिकाएँ हैं उन सभी ने बहुत गंभीरता पूर्वक इस मुद्दे को उछाला और इसका प्रभाव यह हुआ कि निर्भया को लेकर पूरे देश में एक जनचेतना की लहर पैदा हुई और लोग सड़कों पर आयें। हम देखते हैं कि इस केस को लेकर मीडिया जन की आवाज बनी और सत्ता के ऊपर इतना दबाव बना कि लगभग कुछ दिनों के अंदर ही अपराधी को पकड़कर जेल में डाल दिया गया। मीडिया के सक्रीय पहल के कारण 16 दिसंबर 2012 को हुए निर्भया गैंगरेप मामले के चारो अभियुक्तों को 20 मार्च 2020 को फांसी दी गई। इस प्रकार की अनगिनत घटनाएं हैं जिसका खुलासा पुरजोर रूप से मीडिया करता रहा है। हाथरस की घटना को भी देख सकते हैं 14 सितंबर 2020 को उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले में उच्च जाति के चार पुरुषों ने 19 वर्षीय दलित युवती के साथ गैंरेप किया और उसे मार डालने का प्रयास किया। 29 सितंबर 2020 को दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में उसने अंतिम सांस ली।रसूकों को बचाने के लिए वहां के पुलिसकर्मियों ने बिना परिजन की अनुमति के आनन-फानन में पेट्रोल डालकर उसकी लाश जला दी और उसके परिवार के लोगों को जाने तक नहीं दिया गया यह दरिंदगी से पूर्ण घटना एक गांव में ही सिमट कर रह जाती अगर मीडिया सक्रिय नहीं होता या वह उस घटना को दबा देता तो शायद इस घटना के चारों आरोपी आसानी से बच निकलते लेकिन मीडिया ने अपने महत्वपूर्ण कवरेज द्वारा इसे देश की जनता के सामने उजागर किया कहने का तात्पर्य है कि अगर मीडिया पूरी सच्चाई के साथ किसी भी घटना को जन तक पहुंचाता है तो न्याय में देर तो हो सकती है लेकिन अन्याय को वह पटकनी दे देता है। मीडिया का का काम है कि वह समाज के सभी वर्गों के मुद्दे को पूरी ईमानदारी से उठाए। मीडिया एक प्रहरी के रूप में अपना स्थान रखती है। प्रहरी का मतलब है कि वह जागती रहे और देश और समाज के लोगों को जगाती रहे मीडिया के सोने का मतलब कि पूरे देश का सो जाना है। जहां तक भारतीय मीडिया में स्त्री सरोकार को लेकर अगर देखा जाए तो इसके विभिन्न पहलू देखे जाएंगे। एक तरीके से देखें तो मीडिया का जो स्वरूप है उसका जो कैरेक्टर है वो वाकई में बहुत मजबूत है एक सिपाही वाला है और बल्कि एक

न्यायालय की भूमिका सबसे पहले अदा करता है क्योंकि न्यायालय में तो केस जाता है बाद में मीडिया पहले ही ट्रायल करता है अपने बेसिस पर और वह एक तरह का न्यायधीश की भूमिका निभाता है तो हम इस रूप में भी मीडिया को देख सकते हैं। ऐसी अनेक घटनाएं हैं हमारे देश में घटी हैं या दुनिया में घटित हुई है उसको मीडिया का एक धड़ा कवर करता रहा है जो मीडिया बिका नहीं है जिसका ईमान मानवता के प्रति समर्पित है।जिसका कर्तव्य इंसान के प्रति समर्पित है। वह मीडिया आज भी इन वसूलों पर कायम है। मसलन इस संदर्भ में हिंदुस्तान के अंदर अनेक टीवी चैनल, न्यूज चैनल, एनडीटीवी इंडिया को हम इसमें देख सकते हैं और बहुत सारे न्यूज चैनलभी इसमें लिए जा सकते हैं लेकिन एनडीटीवी इंडिया इसमें सर्वोपरी है। पिछले दो सालों में कोरोना काल के दौरान हम देखते हैं, जो हमारे प्रवासी मजदूर थे या हैं जो हमारे महानगरों में काम कर रहे थे लॉक डाउन के दौरान वो बेरोजगार हो गए। और वे अपने जीवन यापन के समस्याओ के कारण वो अपने अपने गाँवों की ओर, अपने.अपने वतन की ओर, अपनेअपने राज्यों की ओर महानगरोंसे पलायनकरने लगें अगर इसको हम देखें या कैटराइज करके देखे तो प्रवासी मजदूरो की जो समस्याएं थीं वो बहुत दर्दनाक थी उनकी जो सहभागीनी यानि जो स्त्रियां थी उनकी समस्यों को अगर ध्यानसे देखे तो पता चलता है कि इस यात्रा के दौरान उन्होने बहुत कष्ट झेला। कई स्त्रियों ने 1000 किलोमीटर यात्रा के दौरान बच्चों को जन्म दिया, जिससे कई स्त्रियों की इसमें मौत भी हुई है, कई स्त्रियों के बच्चे भी वहां मर गए। इस पैदल यात्रा के दौरान पुरुष तो कहीं भी लघु शंका के लिए चला जाता था लेकिन स्त्रियों को ऐसी तमाम अनगिनत समस्याओं का सामना करना पड़ा जिसे मीडिया ने बहुत शिद्दत के साथ कवर करने का प्रयास किया। इस यात्रा के दौरान स्त्रियों को छेड़खानी जैसी चीजों का सामना करना पड़ा। इन समस्याओं और मजबूरियों को मीडिया ने कवर किया और बहुत ही बारीकी से इस चीज को उठाया और कैटराइज करके दिखाना या संधिबद्ध करके दिखाना बहुत बड़ी बात थी प्रवासी मजदूरों के मार्फत। इसी प्रकार हम और भी क्षेत्रों में महिलाओं की समस्या को देख सकते हैं।

मीडिया की जो भागीदारी है उसे हमें देखना पडेगा। अभी वर्तमान दौर में आजकल जो चुनाव होने वाला है और जो स्त्री प्रत्याशी हैं जो चुनाव के लिए खड़ी हैं वहां पर उन स्त्रियों को मीडिया के लगभग टीवी चैनल्स के हर चैनल उनको अपने चैनल पर बखूबी कवरेज दे रहे हैं। यह बहुत बड़ी सम्मान की बात है कि उनके अपने वजूद को,उनके अपने तमाम उपलब्धियों को चैनल दिखा कर इस समाज में संदेश प्रसारित कर रहा है कि किस तरह वह सशक्त हो रही हैं और अपने संघर्ष के लिए, अपने वजूद के लिए,अपने चयन के अधिकार के लिए, अपनी अभिव्यक्ति की आजादी के लिए वह खुद खड़ी हो रही हैं। इन चीजों को अगर चाहे तो मीडिया जगह नहीं दे सकता, लेकिन मीडिया इन चीजों को उठाकर, जगह देकर कहीं न कहीं स्त्री अस्मिता की रक्षा करने में अपनी सशक्त भूमिका निभा रहा है। इसी प्रकार से हम मीडिया के इन तमाम विषयो को स्त्री अधिकारों के संदर्भ में देख सकते हैं और यह देख सकते हैं कि स्त्रियों को लेकर मीडिया एक सकारात्मक दिशा की ओर अग्रसर हो रहा है। मीडिया का जो क्रमिक विकास है दिन प्रतिदिन हो रहा है। जैसे स्वतंत्रता संग्राम के समय की पत्रकारिता को अगर हम देखें जिसको हम पहले जर्नलिज्म बोलते थे उदारीकरण यानि वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण के बाद हमने इसको नया शब्द दिया मीडिया। यानि अगर हम जर्नलिज्म की बात करें तो उस समय स्त्री सरोकार को लेकर लिखा जाता था लेकिन इतना खुला चित्रण नहीं था। दूसरी बात मीडिया का जो स्वरूप था वह बहुत सीमित था एक लिमिट में था। उसकी सीमा रेखा खीचि हुई थी क्योंकि वो सिर्फ प्रिंट मीडिया और ले देकर टेलीविजन ही था। टेलीविजन की भी एक सीमा रेखा थी यानि का 24 घंटे वाला हिसाब नहीं था कुछ घंटे होता था और बाकी अखबार होता था पत्रिकाएं होती थीं और ये बहुत ज्यादा राजनैतिक होती थी। उस समय भी पितृसत्ता का एक मजबूत शिकंजा दिखाई पड़ता है।लेकिन आजादी के बाद अगर इसे देखें तो विशेष तौर पर 90 के दशक के बाद जब हमारे देश में उदारीकरण का युग शुरू हुआ उस समय के हमारे तत्कालीक प्रधानमंत्री डॉ.मनमोहन सिंह उन्होंने जो उदारीकरण की नीतियां अपनाई,जो माडॅल अपनाया और उसके साथ ही जो बाहरी निवेश आया उससे हमारा मीडिया भी ओपन हुआ। मीडिया में भी निवेश किया गया पूंजी का यानि जो हमारा दूरदर्शन है आकाशवाणी चैनल हुआ करते थे उसके साथ साथ निजी चौनल यानि एफ एम आया बहुत सारे रेडियों के कार्यक्रम शुरू हुए। इसी दौर में पहला प्राइवेट न्यूज चैल आजतक शुरू हुआ।

पहले आधे घंटे के लिए न्यूज आता था फिर 24 घंटे तक आने लगा न्यूज। कई सारे जो चैल अंग्रेजी में पहले से थे वह हिंदी में टेलीकास्ट होने लगे है। जी न्यूज, स्टार न्यूज और एनडीटीवी उसके बाद आना शुरू हुए। इन सब ने अपने शुरुआती दौर से ही महिलाओं के सरोकारों को लेकर, उनकी छवियों को लेकर एक सकारात्मक रुझान दिखाया। महिला पत्रकारों की भर्ती की गई। उनके मुद्दों को बहुत शिद्दत के साथ उठाया जाने लगा। यहां तक कि उनके मुद्दों को बकायदा एक पूरी स्टोरी बनाकर पेश करते हैं। इनके मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर के चैनलों द्वारा पेश करके पूरी दुनिया में पहुचाना एक सकारात्मक कदम ही है। हम मानते हैं कि मीडिया हमारा लोकतंत्र का मजबूत स्तंभ है अगर हम मीडिया का गला घोट दें तो समझिए कि आम जनता का गला घोटा जा रहा है। क्योंकि आम जनता का कहीं ना कहीं प्रतिबिंब है मीडिया और उस मीडिया में आम जनता की भावनाएं, उसके विचार ,उसकी चेतना, उसके आंदोलन, उसका आक्रोश, उसका विकास, उसका पतन उसकी परेशानियां उसकी तमाम चीजें हमको दिखाई पड़ती हैं। इन तमाम चीजों में स्त्रियां भी वह मनुष्य है जिसका वर्णन, चित्रण जिसका मूल्यांकन,विश्लेषण मीडिया करता रहा है। दिल्ली के शाहीन बाग में महिलाओ ने जिस प्रकार से मोर्चा संभाला या किसान आंदोलन में महिलाओं ने पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर देश को जो अपनी थाप दी वह इतिहास में सुनहरे पन्नों से लिखा जायेगा और स्त्री विमर्श को एक नया आयाम देगा। स्त्री के इस संघर्षवादी नये रूप को मीडिया ने खूब कवरेज दिया। रसोई घर और खेतों से निकल कर स्त्रियों ने जिस तरह से सत्ता के खिलाफ बिगुल बजायी वह अपने आप बदलते परिवेश का स्वरूप है।

अत: पर हम देख सकते हैं कि मीडिया का जो विकास क्रम है जो विकास यात्रा है कहीं ना कहीं वह एक तरीके से स्त्री विरोधी नहीं है इससे पहले जो थोड़ी बहुत नकारात्मक तस्वीर दिखाई पड़ती है वो आज के दौर में आकर स्त्री समर्थन में दिखाई पड़ती है और ये परिवर्तन होना कहीं ना कहीं एक सामाजिक और सांस्कृतिक परिघटना है। जिसका बिगुल बजाना बड़े स्तर पर अभी शेष है। देखा जाए तो वाकई में मीडिया का रूप बहुत मजबूत है वह एक सिपाही वाला रोल प्ले करता है। हां यहां यह स्पष्ट कर देना जरूरी है कि भारतीय मीडिया को अभी भी लैंगिक पूर्वाग्रहों से पूरी तरह मुक्त होने की जरूरत है। लैंगिक पूर्वाग्रहों से मुक्ति ही मीडिया को लोकतंत्र और स्त्री प्रहरी के रूप में स्थापित कर पाएगी। हालांकि स्त्रियों के मुद्दों को लेकर अब तक मीडिया की यात्रा संतोषजनक है लेकिन प्रतिबद्धता का आना शेष है।